छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की प्रासंगिकता

शोध निर्देशक
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ बिलासपुर

शोधार्थी एवं प्रस्तुतकर्ता
बीरू लाल बरगाह
सहायक प्राध्यापक हिंदी
राजीव गांधी शास. महाविद्यालय
सिमगा, जिला बलौदाबाजार (छ.ग.)

बीसवी शताब्दी की महान विभूतियों में से एक पद्मश्री साहित्य वाचस्पति पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी संक्रमण काल के सर्वाधिक सामर्थ्यवान कवियों में अग्रगण्य हैं। द्विवेदीयुग और छायावादी युग के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी पाण्डेय जी की काव्य यात्रा को समझे बिना खड़ी बोली हिंदी के विकास को सही ढंग से नहीं समझ सकते हैं। डॉ. बलदेव जी कहते हैं ''पाण्डेय जी ने द्विवेदीयुग के शुष्क उद्यान में नूतन सूर भरा तथा नवबंसत की अगुवानी कर युग प्रवर्तन का ऐतिहासिक कार्य किया।''[1] पाण्डेय जी के काव्य में द्विवेदी एवं छायावादी युगीन काव्य की सभी विशेषताएँ परिलक्षित होती है। एक ओर उनके काव्य में द्विवेदी युग के महान आदर्श जिसमें लोकहित प्रमुखता से अभिव्यक्त होता है, तो वहीं दूसरी ओर आंतरिक सुन्दरता, सूक्ष्म चित्रण, किसी वस्तु या प्रकृति का असाधारण चित्र आदि छायावादी विशेषताएँ दृष्टव्य होती हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाण्डेय जी के काव्य लेखन में स्वच्छंदतावाद और आदर्शवाद जैसी दो विरोधी प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती है। पाण्डेय जी सर्वप्रथम काव्य की उन्मुख हुए, उसके पश्चात् वे विचारक, साहित्य समीक्षक, अनुवादक और गद्य साहित्य लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनकी 'कुररी के प्रति' रचना को पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी ने प्रथम छायावादी कविता के रूप में स्वीकार किया।

छायावाद कहते ही एक ऐसे समय का बोध होता है कि उस समय के केन्द्र में छाया हो। छायावाद का समय 1918–1936 ई. तक मानी जाती है। उस समय जो काव्यांदोलन चला उसे हिंदी में छायावाद कहते हैं। हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग भक्तिकाल को माना जाता है और आधुनिक हिंदी (खड़ी बोली) का स्वर्णयुग 'छायावाद' को माना जाता है। पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ही 'छायावाद' के प्रवर्तक हैं।

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी का जन्म 30 सितम्बर सन् 1895 ई. को बिलासपुर जिला वर्तमान में जांजगीर–चांपा जिले के बालपुर नामक ग्राम में हुआ था । महानदी के तट प्रदेश में बसा यह गाँव रायगढ़ सारंगढ़ मार्ग पर चन्द्रपुर के पूर्व दिशा में स्थित है । महानदी के पुल से देखने पर घनी अमराइयों से झाँकता हुआ बालपुर गाँव मानों प्रकृति की गोद में बैठा हुआ सा प्रतीत होता है । महानदी की सुन्दरता पर मुग्ध होकर पाण्डेय जी लिखते है –

''कितना सुन्दर और मनोहर, महानदी यह तेरा रूप ।
कलकल मय निर्मल जलधारा; लहरों की है छटा अनूप ।।''

महानदी–1

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने सन् 1920 ई. में जबलपुर मध्यप्रदेश से निकलने वाली पत्रिका 'श्रीशारदा' में 'हिंदी में छायावाद शीर्षक' से चार निबंधों की एक लेखमाला छपवाई। इन चारों निबंधों में पांच बातों की ओर ध्यान इंगित किया है जिसमें वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य बोध, रहस्यवादिता, शैलीगत वैशिष्ट्य और अस्पष्टता।

'छायावाद' का नामकरण पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी ने किया है। डॉ. विनय मोहन शर्मा को एक पत्र में लिखा है – ''छायावाद नाम सर्वथा मेरा गढ़ा हुआ है और मैंने परोक्ष सत्ता के प्रति अस्पष्ट रूप से व्यक्त भावों की रचना के लिए इसे प्रयुक्त किया था।''[2] 'कुररी के प्रति' रचना के बारे में उनका कहना है –''रात्रि में कुररी के करूण स्वर सुनकर बिस्तर पर पड़े पड़े मैंने मन में ही कुररी के प्रति की रचना कर डाली। तब मुझे आश्चर्य हुआ कि छायावाद लिखा नहीं जाता, अनुभूति द्वारा अपने आप ही लिख जाता है।''

श्रीशारदा 1920 में दूसरा लेख है 'छायावाद क्या है ? प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं'' हिंदी में यह बिल्कुल नया शब्द है। अंग्रेजी या पाश्चात्य साहित्य अथवा बंग साहित्य की वर्तमान स्थिति की कुछ भी जानकारी रखने वाले समझ जाएँगे कि यह शब्द Mysticism के लिए आया है।''[3]

यूरोपीय पुनर्जागरण की शुरूआत इटली में हुई है। इसी प्रकार भारतीय पुनर्जागरण की शुरूआत बंगाल में। बंगाल में ईसाई संतों द्वारा ईश्वर की प्रार्थना करते समय उन्हें अपने ऊपर ईश्वर की छाया का आभास होता था जिसे फैन्टेसमाटा (fantasmata) कहते हैं। इस तरह की आध्यात्मिक छाया का भान अनुभूति रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं में दिखाई पड़ती है । रवीन्द्रनाथ टैगोर को उनकी कृति 'गीतांजलि' के लिए सन् 1913 ई. में साहित्य का प्रथम नोबल पुरूस्कार मिला और हिंदी के कवियों ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं का अनुकरण किया। तत्पश्चात् 'छायावाद' नाम से आंदोलन चल पड़ा।

छायावाद विषयक लेखमाला से पहले मार्च 1920 ई. हितकारिणी पत्रिका में छायावाद की संक्षिप्त परिभाषा 'चरणप्रसाद' नामक कविता में दी है –

''भाषा क्या वह छायावाद
है न कहीं उसका अनुवाद''[4]

छायावाद शब्द का प्रथम प्रयोग सन् 1920 ई. के आसपास ''द्विवेदी युग के वयोवृद्ध साहित्यकारों और आलोचकों ने निंदा या घृणा के भाव से नहीं 24–25 वर्ष के एक अधकचरे नवयुवक ने सद्भावना पूर्वक किया था।''[5] ये नवयुवक और कोई नहीं स्वयं मुकुटधर पाण्डेय जी थे।

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय और छायावादी काव्य की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसने खड़ी बोली हिंदी को आधुनिक भावबोध से युक्त रचनात्मक और समृद्धशाली काव्यभाषा बनाने की पहल की। 'हिंदी में छायावाद' निबंध के प्रथम निबंध 'कवि स्वातंत्र्य' मे पाण्डेय जी ने रीति ग्रंथों की परतंत्रता से मुक्त होकर काव्य में व्यक्तित्व तथा भाव, छन्द, भाषा के प्रकाशन रीति में मौलिकता की आवश्यकता पर जोर दिया है।

''छायावाद एक ऐसी मायामय सूक्ष्म वस्तु है कि शब्दों द्वारा उसका ठीक–ठीक वर्णन करना असंभव है। शब्द अपने स्वाभाविक मूल्य खोकर सांकेतिक चिन्ह मात्र हुआ करते हैं।''[6]

छायावाद के कवि वस्तुओं को असाधारण दृष्टि से देखते हैं। उनकी रचना की सम्पूर्ण विशेषताएँ उनकी इस दृष्टि पर आधारित रहती है, वह क्षणभर में वस्तुओं को बिजली की तरह स्पर्श करती हुई निकल जाती है। अस्थिरता और क्षीणता के साथ उसमें एक तरह की विचित्र उन्मादकता और अंतरंगता होती है जिसके कारण वस्तु उसके प्राकृतिक रूप से भिन्न रूप में दिखाई पड़ती है। यह अंतरंग दृष्टि ही छायावाद की विचित्र प्रकाशन रीति का मूल है। उसमें किसी वस्तु या दृश्य का ज्यों का त्यों चित्र लिया जाता है पर शब्द ऐसे वेगयुक्त होते हैं कि भाषा उड़ती हुई जान पड़ती है। ऐसी रचनाओं में शब्द अपने वास्तविक मूल्य खोकर सांकेतिक चिहन मात्र होते हैं।

इस प्रकार मुकुटधर पाण्डेय जी की सूक्ष्म दृष्टि ने छायावाद के मूलभावना आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि को पहचान लिया था। निबंध 'हिंदी में छायावाद' इस निबंध के माध्यम से छायावाद पर लगाये गये अस्पष्टता आदि आरोपों का खण्डन करते हुए लिखते हैं – ''छायावाद की आवश्यकता हम इसलिए समझते हैं कि उससे कवियों को भाव प्रकाशन का एक नया मार्ग मिलेगा। इस प्रकार के अनेक मार्गों अनेक रीतियों का होना ही उन्नत साहित्य का लक्षण है।''[7]

मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में मन के बंधन की पीड़ा की अभिव्यक्ति है जो स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए छटपटा रही है। काव्य स्वातंत्र्य में पाण्डेय जी के शब्द हैं संसार में प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्रता चाहता है, फिर भी उसे मानसिक भूमि में परतंत्र रहना क्यों पसंद होगा यह बात समझ मे नहीं आती।

डॉ. नामवर सिंह का कथन है – ''छायावाद का ऐतिहासिक एवं तात्विक विवेचन छायावाद पर पहला निबंध होने के साथ ही एक अत्यन्त सूझबूझ प्रभावशाली समीक्षा भी है। इस निबंध का महत्व ऐतिहासिक ही नहीं, स्थायी भी है।''[8] पाण्डेय जी ने भावों की छाया या अस्पष्ट–अप्रत्यक्ष स्वरूप के लिए सांकेतिक अभिव्यक्ति हेतु छायावाद नाम सुझाया। वे छायावाद की क्लिष्टता को सरल बनाकर जन सामान्य में लोकप्रिय बनाने के पक्षपाती रहे। पाण्डेय जी के 'कविता' शीर्षक निबंध काव्यादर्श और छायावाद के पर्याय को प्रमाणित करते हैं। वे काव्य में लोकगीतों की सरसता व श्रम–शक्ति का समावेश करना चाहते थे। उनका ध्यान गाँव में काम करने वाले गरीब किसानों, मजदूरों की ओर गया। उन्होंने श्रम की महिमा गाई –

''धन्य तुम ग्रामीण किसान
सरलता, प्रिय औदार्य निधान
छोड़ जन संकुल नगर निवास
किया क्यों विजन ग्राम में गेह
नहीं प्रासादों की कुछ चाह
कुटीरों से क्यों इतना नेह।''

–किसान

पाण्डेय जी काव्यकला को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि – हृदयग्राही भाषा चित्र का नाम ही काव्य है, कविता प्रभावोत्पादक और मनोरंजक होती है। सौंदर्य वर्णन के सिवाय कविता में कुछ ऐसी विशेषता होनी चाहिए कि उसके पाठ से सर्वत्र ईश्वरीय भाव अथवा एक अदृश्य शक्ति या किसी अखण्ड नियम की व्यापकता या प्रधानता हो। साथ ही वे कहते हैं कि मानव जीवन का प्रवाह जब आध्यात्मिक भावों के समुद्र में जाकर लीन हो जाता है, तब वह अपने अंतिम लक्ष्य पर पहुँच जाता है।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् भारतीय जनता निराशा के सागर में डूब रही थी। ब्रिटिश सत्ता के अत्याचार के कारण कवियों में अंसतोष और विद्रोह के भाव थे, वे इसे व्यक्त करने में असमर्थ रहे। इस संक्रमण काल में कविता शीर्षक निबंध के अंतर्गत पाण्डेय जी ने नवयुवक कवियों को प्रोत्साहित करते हुए लिखा है – ''हमारे कवि और लेखक इस ओर सचेष्ट है और वे देश की आवश्यकता को समझकर जन जागरण, एकता वीरता और स्वतंत्रता आदि के भाव बराबर फैला रहे हैं। यह बहुत ही शुभ लक्षण हैं और शीघ्र ही अभीष्ट फल की प्राप्ति होगी।''[9]

देश की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए कवि आर्य सन्तानों को जागृत करने का संकल्प लेते हैं। उठो चेतो की यह पंक्तियाँ उल्लेखनीय है :

''उठो हे आर्य सन्तानों, सबेरा हो चुका प्यारे।
समय यह है न सोने का तजो आलस्य को भाई।
लगो कर्तव्य में अपने भगे दारिद्रय दुःखदाई।
उदय हो सौख्य सूरज का गगन में लालिमा छाई।''

–उठो चेतो

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं में साहित्य मनीषियों ने छायावाद की झलक देखी और सराहा। पाण्डेय जी ने श्री शारदा पत्रिका में विस्तार से प्रकाश डाला जो उनके चिंतन और अध्ययन की अमूल्य निधि है। छायावाद के प्रवर्तक कवि उन्हें माना जाता है पर वे विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि ''मेरी रचनाओं में चाहे लोग जो भी खोज ले परन्तु वे विशुद्ध रूप से मेरी रचनाओं पर आंतरिक सहमज अभिव्यक्ति मात्र है। उनमें न तो कल्पना की ऊँची उड़ान है न विचारों की उलझन, न भावों की दुरूहता। उनमें उर्दू की चीजों की चुलबुलाहट या बांकपन भी नहीं। वह सरल सहज उद्‌गार मात्र है।''[10]

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने 'हिंदी में छायावाद' नामक निबंध के माध्यम से 'छायावाद' का प्रर्वतन किया। पाण्डेय जी का पद्य और गद्य दोनों में समान अधिकार है। उनकी रचनाओं की सूची प्रस्तुत है –

01) पूजाफूल (काव्य संग्रह) – ब्रह्म प्रेस, इटावा : 1916
(02) शैलबाला (अनूदित उपन्यास) – हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता, 1916
03) परिश्रम (निबंध संग्रह) – हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917
04) लच्छमा (अनूदित उपन्यास) – हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता : 1917
05) हृदयदान (कहानी संग्रह) – गल्पमाला, बनारस : 1918
06) मामा (अनूदित उपन्यास) – रिखवदास वाहिनी एंड कंपनी, उड़ीसा : 1924
07) छायावाद एवं अन्य निबंध – म.प्र. साहित्य सम्मेलन, भोपाल : 1979
08) स्मृतिपुँज – तिरूपति प्रकाशन, हापुड़ : 1983
09) विश्वबोध – श्री शारदा साहित्य सदन, रायगढ़ : 1984

10) छत्तीसगढ़ी मेघदूत – (अनूदित काव्य) – छत्तीसगढ़ लेखक संघ, रायगढ़ : 1984

11) हिंदी में छायावाद – तिरूपति प्रकाशन, हापुड़ : 1984

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी से संबंधित अनेक संपादित पुस्तकों में प्रमुख हैं –

01) मुकुटधर पाण्डेय : व्यक्ति एवं रचना – सं. महावीर अग्रवाल, श्री प्रकाशन, दुर्ग (छ.ग.) : 2001

02) पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चयनिका – छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर : 2007

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय जी के काव्य सरल और सहज है। उनमें अंतः सौंदर्य और आध्यात्मिक भावनाओं की प्रमुखता है जो छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है। उनके पास एक सरल अनुभूति जिज्ञासायें हैं, शब्दों का आडम्बर नहीं है। कबीरदास की भांति वे लिखते हैं –

यह दुनिया बाजार रूप है,
लोग बाजारी हैं भाई।
काम, क्रोध, मद, लोभ जनति है
वस्तु यहाँ बिकने आई।

कवि को ईश्वरीय सत्ता का आभास पतितों के दुख में दीन–हीन के अश्रु नीर में, कृषक के हल में और कवि के काव्य में मिलता है –

''दीन हीन के अश्रु नीर में
पतितों के परिताप पीर में
सरल स्वभाव कृषक के हल में
पतिव्रता रमणी के बल में
श्रम सीकर से सिंचित धन में
तेरा मिला प्रमाण।''

– विश्वबोध

छत्तीसगढ़ की मिट्टी से उन्हें विशेष अनुराग था। यहाँ की प्राकृतिक सौंदर्य नदी–पहाड़, पशु, पक्षी से लगाव था। महानदी कविता की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं –

''कितना सुन्दर और मनोहर महानदी यह तेरा रूप
कलकल मय निर्मल, जलधारा, लहरों की है छटा अनूप
तुझे देखकर शैशव की स्मृतियाँ उर में उठती जाग
लेता है कैशोर काल का अँगड़ाई अल्हड़ अनुराग।''

–महानदी

पाण्डेय जी के काव्य संग्रह पूजाफूल में महानदी ग्राम गुणगान, फूल, गुलाब, प्रभात, संध्या षट्ऋतुओं का वर्णन आदि प्रकृति परक कविताएँ हैं। प्रकृति के प्रति कवि की गहरी आत्मीयता है –

''हरित पल्लवित नववृक्षों के दृश्य मनोहर।
होते मुझको विश्व बीच है जैसे सुखकर।
सुखकर वैसे अन्य दृश्य होते न कभी हैं।
उनके आगे तुच्छ परम वे मुझे सभी हैं।।''

– मेरा प्रकृति प्रेम

ग्राम्य जीवन का वर्णन करते हुए कवि ने प्रायः पनघट और पनिहारिनों का वर्णन किया है। इस प्रसंग में पाण्डेय जी ने सहज भावों को ही अभिव्यक्ति दी है :

''पनिहारिन पानी लेने को,
पंक्ति बाँध कर जाती हैं।
सिर पर नीर पूर्ण मिट्टी के,
कलसे ले–ले आती हैं।।''

रात्रि के समय कुररी के करूण विलाप को सुनकर पाण्डेय जी का हृदय करूणा से भर उठा। मन ही मन 'कुररी के प्रति' काव्य की रचना कर डाली। 'कुररी के प्रति' हिंदी काव्य साहित्य की एक ऐसी अमर रचना है जिसने युग निर्माण का कार्य किया है। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने 'कुररी के प्रति' रचना को प्रथम छायावादी काव्य माना है। पंक्ति प्रस्तुत है –

''बता मुझे ऐ विहग विदेशी अपने जी की बात
पिछड़ा था तू कहां, आ रहा जो कर इतनी रात।''
– कुररी के प्रति

गद्य और पद्य दोनों में पाण्डेय जी का समान अधिकार है। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, उड़िया, बंगला और अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान था। उनकी प्रकाशित गद्य है – 'पूजाफूल', 'शैलबाला', 'मामा', 'लच्छमा', 'परिश्रम' और 'हृदयदान' है। उन्होंने महाकवि कालिदास की कालजयी कृति 'मेघदूतम्' का छत्तीसगढ़ी में भावपूर्ण अनुवाद किया। जो छत्तीसगढ़ी भाषा के संवर्धन और विकास में मील के पत्थर सिद्ध होते हैं। कथा के प्रारंभ में कहा गया है –

''यक्ष एक हर अपन काम मा
गलती कछु कर डारिस
तब कुबेर हर शाप छोड़ अलका ले
ओला निकारिस।''
–मेघदूत (छत्तीसगढ़ी)

पण्डित मुकुटधर पाण्डेय काव्य चर्चा के दौरान कालिदास, भवभूति, तुलसीदास, कबीर, मीरा, सूरदास, शेली, मेंटरलिंक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, माइकेल मधुसूदन दत्त, फकीर मोहन सेनापति, मिर्जा गालिब के जीवन से लेकर उनके साहित्य की चर्चा करते थे। अपने समकालीन कवियों में मैथिलीशरण गुप्त और प्रसादजी की चर्चा करते थे। महाकवि कालिदास और तुलसीदास उनके सबसे प्रिय कवि हैं। 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' और 'विनय पत्रिका' उनके सर्वाधिक प्रिय ग्रंथों में से हैं। पाण्डेय जी महात्मा गाँधी जी के विचारों से प्रभावित थे। गाँधी पर वे लिखते हैं –

''तुम शुद्ध बुद्ध की परम्परा में आये
मानव थे ऐसे, देख की देव लजाये
भारत के ही क्यों, अखिल लोक के भ्राता
तुम आये बन दलितों के भाग्य विधाता।''
– गांधी के प्रति

इस प्रकार पाण्डेय जी के साहित्य में भाषा को अपनी संस्कृति और संवेदनात्मक ऊर्जा के अमूर्त संसार को व्यक्त करने की बिम्बात्मक रचना, भावात्मक तथ्यों को अभिव्यक्त करने वाल सांकेतिकता, संवेदना की तीव्रता को प्रेषित करने वाली प्रतीकात्मकता उसने प्रदान की है। भाषा के प्रति परंपरागत वस्तु दृष्टि के बंधनों को तोड़कर उसने अपनी भाव दृष्टि से वस्तु को नए रूप में प्रस्तुत किया। शब्दों का अर्थ, भावबोध और संवेदना के नवीन संस्कारों के अनुरूप ढालने की एकाग्र कोशिश पण्डित मुकुटधर पाण्डेय ने किया। इसके लिए हिंदी साहित्य जगत में वे सदैव प्रासंगिक रहेंगे। अपने देशकाल के परिवर्तित जीवन संदर्भों, आशा, आकांक्षाओं और यथार्थ के बदलते सरगम के अनुरूप एक नयी सामाजिक और विश्व दृष्टि से विकसित करने की भरसक कोशिश की है।

व्यक्ति स्वातंत्र्य और रूढ़ियों से विद्रोह की भावना ने पाण्डेय जी को अपना एक निजी और वैयक्तिक मुहावरा तलाश करने के लिए प्ररित किया था, वह अपनी रणनीति में नितांत व्यक्तिगत, व्यक्तिनिष्ठ और व्यक्तिवादी होता गया। पाण्डेय जी के साहित्य आधुनिकता के सारे प्रतिमानों पर खरी उतरती है और वह पूर्ण रूप से आधुनिक है। इसलिए वह सदैव प्रासंगिक रहेगी। नामवर सिंह जी का छायावाद के परिप्रेक्ष्य

में कथन है –''छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता है और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।''[11] नामवर सिंह ने मुक्ति को केन्द्र में रखा और स्वाधीनता की बात कही। रूढ़ियाँ समाज को कमजोर बना रही थी विदेशी पराधीनता अर्थात् अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति। इन सामयिक तथ्यों के माध्यम से वे 'छायावाद' को युग संदर्भ से जोड़ते हैं।

पाण्डेय जी के काव्य में प्रकृति के माध्यम से मानव की स्वतंत्रता की ओर संकेत करते हैं क्योंकि प्रकृति के सारे उपादान पर्वत, नदी, झरने, पेड़–पौधे, चिड़ियाँ, सूर्य का प्रकाश, जल, वायु आदि स्वतंत्र हैं, इन्हें कोई गुलाम नहीं बना सकता है।

'हिंदी में छायावाद' और 'कुररी' जैसी अमर ऐतिहासिक रचना का सृजन कर 6 नवम्बर 1989 ई. को पंचतत्व में विलीन हो गये। जीवन के अंतिम क्षण के संबंध में पाण्डेय जी की निम्न पंक्तियाँ उल्लेखनीय है–

''जीवन की संध्या में अब तो है केवल इतना मन–काम
अपनी ममतामयी गोद में, दे मुझको अंतिम विश्राम ।।
चित्रोत्पले, बता तू मुझको वह दिन सचमुच कितना दूर ।
प्राण प्रतीक्षारत् लूटेंगे, मृत्यु पर्व का सुख भरपूर ।।''

महानदी–1

खड़ी बोली हिंदी के विकास, उत्कर्ष में छायावाद और पण्डित मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. पण्डित मुकुटधर पाण्डेय चयनिका, (प्रस्तावना से) प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू ।
2. साहित्यान्वेषण, विनय मोहन शर्मा; पृ. क्र. 14–15 ।
3. छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, सं डॉ. बलदेव साव; पृ. क्र. 136 ।
4. पण्डित मु. पा. चयनिका, (प्रस्तावना से) सं. प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू ।
5. छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय, संपादक डॉ. बलदेव साव; पृ. क्र. 138 ।
6. पण्डित मु. पा. चयनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू; पृ. क्र. 139 ।
7. पण्डित मु. पा. चयनिका, संपादक प्रो. दिनेश पाण्डेय डॉ. बिहारी लाल साहू; पृ. क्र. 151 ।
8. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख); पृ क्र. 93 ।
9. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल (विनय पाठक आलेख); पृ क्र. 95 ।
10. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, संपादक महावीर अग्रवाल; पृ. क्र. 75 ।
11. मुकुटधर पाण्डेय व्यक्ति एवं रचना, (छायावाद लेख नामवर सिंह); पृ. क्र. 177 ।